पॉवर लूम पर बनने वाले वस्त्रों में साईंजिंग प्रक्रिया के अंतर्गत धागों को मजबूत करने के लिए मटन टेलो का उपयोग धागों के ऊपर होता है| जबकि हथकरघा पर बने हुए वस्त्रों में साईंजिंग प्रक्रिया का उपयोग नहीं होता है| जिससे ये वस्त्र पूर्णतः अहिंसक होते हैं| चल-चरखा में ऐसे वस्त्रों को महिलाएं अपने हाथों से हथकरघा पर बुनती है|

मटन टेलो क्या होता है ?

देश भर के कत्ल खानों में कत्ल किये गये पशुओं के मांस के साथ चिपकी हुई चर्बी ही मटन टेलो है । मांस के साथ चिपके हुए मटन टेलो में रक्त, पस और दूसरी अशुद्धि मिल गई होती है । इस कारण मटन टेलो को केमिकल प्रोसेस द्वारा दुर्गन्ध और लाल रंग रहित किया जाता है एवं यह बचा हुआ सफ़ेद घी जैसा पदार्थ ही मटन टेलो कहलाता है ।

मटन टेलो का उपयोग :

लगभग सभी कॉटन मिलों में कपड़ा बनने से पहले धागे की साइजिंग प्रोसेस करने के लिए मटन टेलो का उपयोग किया जाता है । कपड़ा बनाने की प्रोसेस में धागा बनने के बाद साइजिंग करते है, तभी धागा टूट न जाए इसलिए धागे के ऊपर मटन टेलो का लेयर चढ़ाया जाता है, जिससे धागा मजबूत और मुलायम बने ।

कपड़ा तैयार हो जाने के बाद उसकी धुलाई के लिए **Fabric Softener** का उपयोग किया जाता है और ज्यादातर **Fabric Softener** में मटन टेलो का उपयोग होता है ।

मटन टेलो बेचने वाले व्यापारियों का कहना है कि कपड़ा बनाने में इसका उपयोग होता है । इसके अलावा मटन टेलो का उपयोग साबुन बनाने में, बायो डीज़ल में, मोमबत्ती बनाने में,सौन्दर्य प्रसाधन बनाने में तथा कई खाद्य पदार्थ बनाने में जैसे चिप्स, डोमिनोज पिज़्ज़ा, बेकरी आइटम, मिठाई, तेल के खाद्य पदार्थ इत्यादि जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते सब में मटन टेलो का उपयोग होता है ।

कत्ल किये गए पशुओं के रक्त और हड्डी का व्यापार होता है और अपने रोज के खाद्य पदार्थों में उसका उपयोग होता है जो अब अज्ञात नही है । मटन टेलो, रक्त और हड्डी की बाज़ार में अच्छी कीमत मिलने के कारण मांस बेचना सहज और सस्ता हो जाता है ।

आइए अब हम जाग जाएं और रक्त हड्डी तथा मटन टेलो से बनने वाले पदार्थों का बहिष्कार करें। फल स्वरूप उनकी बाजार मांग घट जाएगी, जिससे मांस को ही महंगे दामों पर बेचना पड़ेगा और लोग उससे आजीविका करना छोड़ देंगे, जिससे पशुओं का संहार होना रुक जाएगा।

नाशिक, बेलगाँव, मालेगांव और मुंबई के मटन टेलो के व्यापारी बताते है की वो लोग टनबन्ध माल मालेगांव और इचलकरंजी की सभी साइजिंग यूनिटों में बेचते है तथा अहमदाबाद प्रोसेसिंग यूनिट में भी बेचते है ।

मटन टेलो की एक कंपनी (मालेगांव) के मालिक से पता चला है की वह अकेला व्यापारी ही एक माह में 20000 किलो मटन टेलो सिर्फ मालेगांव के एक साइजिंग यूनिट में बेचता है । उनकी कंपनी टैक्स के साथ ही माल बेचती है इसलिए व्यापार कम करती है लेकिन जो लोग टैक्स के बिना माल बेचते है उनका व्यापार ज्यादा है । जैन व्यापारी भी अपनी फैक्ट्री में मटन टेलो का उपयोग करते है । उनके धर्म में बाधा न आये इसलिए वह लोग दुसरो से यह काम करवाते है ।

प्रतिदिन तीन लाख पावरलूमों में 2 करोड़ मीटर कपड़ा बनाने के लिए मटन टेलो का प्रयोग होता है ।

अहमदाबाद स्थित पालडी विस्तार के एक जैन श्रावक खुदके साइजिंग यूनिट में मटन टेलो का उपयोग करते हैं। उनका कहना है की मटन टेलो कम कीमत में ज्यादा अच्छा परिणाम देता है । इस कारण हमे मिल के कपड़े पहनने से दोष लगता है ।

भगवान की अंगोछी, मंदिर के धोती दुपट्टे, माताजी एवं दीदीओं की साड़ी आदि वस्त्र इचलकरंजी, मालेगांव और अहमदाबाद के पावरलूम से आते है । जिसके ऊपर व्यापारी एक नामांकित मिल का ठप्पा तथा स्टीकर लगाकर बेचते है ।

अहमदाबाद में टेक्सटाइल रिसर्च में प्रख्यात एक संस्था लिखित में हमें बताती है कि कपड़ों की मिलो में धागों की मजुबूती और कोमलता के लिए मटन टेलो का ही उपयोग होता है । क्योंकि मटन टेलो सस्ता है और अन्य विकल्पों की अपेक्षा अच्छा परिणाम देता है ।

इसके उपरांत मटन टेलो का उपयोग Cationic fabric Softener (जिससे कपड़ा मुलायम बनता है) के रूप में होता है तथा टेस्टिंग करने पर मटन टेलो के अंश भी कपड़ों में पाए जाते है ।